रात्रि क्लास 16/7/68

कचहरी करना अच्छा है। बच्चों का ही फायदा है। इनमें जो अवगुण होंगे वह आस्ते2 निकल जावेंगे। सर्वगुण सम्पन्न बनना है। अवगुण अच्छा नहीं लगता। दिल को भाता नहीं। वह दिल पर चढ़ते ही नहीं। कुदृष्टि नहीं रखनी है। अंधों के स्कूल में भाषण करने गये थे ना। बाबा समझाते हैं आँखें ही बड़ा धोखा देती हैं। सूरदास की कहानी भी इस समय की है। गुस्से आये कहते हैं इससे तो आँख न होता तो अच्छा था। गुस्से में आकर आँखें ही निकाल दी; क्योंकि आँखें ही बड़ी नुकसान देती हैं। आँखों से ही विकारी कुदृष्टि जाती है। अभी बाप कहते हैं आत्मा को देखो। शरीर को न देखो। फिर भी कुछ न कुछ नुकसान कर देते हैं। आँखें धोखा देती हैं तो जो रायल बच्चे होंगे वह तो आँखों पर गुस्सा करेंगे। यह तीसरा नेत्र तुमको ज्ञान का मिलता है। बाप जानते हैं, चलन से समझ जाते हैं। इनकी दृष्टि गन्दी है। वह पद भ्रष्ट कर देते। और बहुत घाटा पड़ जाता है। इस समय पता नहीं पड़ता। माया वश हो हार खा लेते हैं। नहीं तो यह धोखा कब खाना न चाहिए। इससे आँखें बन्द कर देना अच्छा। वह अंधे के औलाद अंधे कहा गया है; क्योंकि अन्धश्रद्धालु हैं। यहाँ तो बाप कहते हैं पवित्र बनना है। कुदृष्टि न जानी चाहिए। बहुतों में कुदृष्टि है। बाप जानते हैं। ब्राह्मणियों में भी कुदृष्टि जाती है। वह क्या पद पावेंगे। जन्म–जन्मान्तर पद भ्रष्ट। और बहुत सजा खावेंगे। गाया हुआ है जैसे उठ पतन पर..... बाबा तो सभी का अनुभवी है।

इस समय वास्तव में यह जो आँखें हैं उनकी बड़ी खबरदारी रखनी है। सबसे जास्ती बच्चे इसमें ही गिरते हैं। खुद भी समझते हैं हम दृष्टि से कितना खराब होते हैं एक/दो में। लॉ बहुत कड़ा है। शिवबाबा को भाकी पहन फिर किसको भी पहन न सके। बाप कहते हैं शिवबाबा को याद कर फिर भाकी। नहीं तो व्यभिचारी कहा जाता। उन पर पाप पड़ता है। बाबा जानते हैं छी छी बच्चे हैं। चलते2 शादी कर लेते तो कितना दन्ड पड़ जाता है। ढेर गिरते हैं। शिवबाबा की भाकी पहनी तो बस। फिर मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। भाई–बहन से भी कुदृष्टि जाती है। इसलिए कहा है भाई–भाई देखो। यह बहुत2 ऊँची मंजिल है। बड़ी मेहनत करते2 पिछाड़ी में वह अवस्था आ सकती है। विश्व का मालिक बनना भी कम बात है क्या। भगवान कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। तुमको बनाता हूँ। यह मंजिल बड़ी ऊँच है। देहअभिमान सारा तोड़ना है। देखने में तो बहुत सहज है। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। सेकण्ड में नर से नारायण विश्व का मालिक बन सकते हो। अपन को आत्मा समझो। बाप को भाकी पहने फिर किसके शरीर को भाकी नहीं पहन सकते। बाप तो यह समझानी देते हैं। कल्प2 देंगे। और कब किसके मुख से ऐसे कब नहीं सुनेंगे। अभी जो तुमको सिखाता हूँ वह कल्प2 सिखाऊँगा। बाप कितना समझाते हैं फिर माया नाक से पकड़ लेती है। बाप की श्रीमत पर नहीं चलते। भारत बहुत2 गंदा है। गुरुओं से गन्दा होना, बाप से बच्चियों का गंदा होना, बाबा के पास तो सभी मिसाल हैं। लिखत में लिखकर देते हैं। तब बाप कहते हैं देखते हुए न देखो।

बच्चों को अपनी सम्भाल रखनी है। एमआबजेक्ट सामने खड़ा है। संगमयुग पर ही बाप बैठ ऐसा सुनाते हैं। ऐसे भी नहीं कि जल्दी से बन जावेंगे। ऊँच पद पाना है। वह पद फिर कल्प2 पाते रहे। इसके लिए बहुत मेहनत चाहिए। बहुतों के अन्दर में शैतानी रहती है। सच्चाई नहीं। बाबा पास रहते हैं; परन्तु सच्चाई नहीं। आज बाबा के पास हैं कल जाकर औरों के पास रहेंगे। अन्दर में शैतानी, झूठ, पाप भरा हुआ है। बनना तो रायल है ना। प्रतिज्ञा करते हो ऐसा बनेंगे। अपने से पूछे कितना अन्दर में शैतानी, कपटी है। फिर क्या पद पावेंगे। बाप तो आये हैं नर से नारायण बनाने; परन्तु जब अपने ऊपर कृपा भी करे ना। अपन को अपनी चलन से ही घात कर देते हैं। बाप तो बहुत ऊँच पद प्राप्त कराने आये हैं। कल्प–कल्पान्तर लिए। मिस किया तो कल्प कल्पान्तर सजा खाते रहेंगे। न सुधारेंगे अभी तो जन्म–जन्मान्तर के जो पाप किये हैं उनका सा0 होता रहेगा, सजा खाते रहेंगे। 21 जन्म का दुख पहले से ही पा लेंगे। सुख जैसे खत्म हो जाता। बहुत खबरदार रहना है। बाप भगवान, उनका राइट हैंड है धर्मराज। उनके पास भी नोट होता है। बच्चों को बाबा

बार–बार कहते हैं कुदृष्टि मत रखो। बाबा के पास आते हैं बात मत पूछो। यहाँ समझते भी हैं घर जाते हैं फिर वही गन्दी कुदृष्टि। इसलिए बाबा कहते हैं बाबा को भाकी पहन दूसरी की पहनी तो बहुत भारी पाप चढ़ जाता है। इससे तो भाकी न पहनना अच्छा है। यह ज्ञान की बातें हैं। बहुतों को अच्छा नहीं लगता है। फिर भी साकार शरीर है ना। आर्यसमाजियों ने भी भाकी का चित्र हाथ किया है। ड्रामा के अनुसार बिघ्न पड़ते हैं। कोई निमित्त बन पड़ते हैं। तुम्हारी सामना आर्यसमाजी ही करते हैं। और कोई नहीं करते हैं। आर्यसमाजी कटर है। और हैं भी कल के। वह निराकार शिव को मानते हैं। उनमें भी भिन्न2 हैं। कोई देवताओं को मानते हैं तो कोई नहीं मानते हैं। बाप कहते हैं तुमको तो एक के सिवाय और किसको जानना ही नहीं है। जैसे तुम बच्चे हो वैसे बाप है। उनमें ज्ञान है। तुम्हारे में ज्ञान नहीं है। आत्मा तो एक ही है ना। सिर्फ तुम्हारी आत्मा पतित है। इसलिए ताकत कम है। सर्वशक्तिवान बाप को कहा जाता है; क्योंकि सतोप्रधान है। ज्ञान का सागर है। नालेज से ही तुम बनते हो। नालेज और पवित्रता। खबरदार रहते रहो। आँखें धोखा देती हैं नहीं तो 21 जन्म का पद गंवाये देंगे। बच्चे जानते हैं बाप सिर्फ कहते हैं मैं हर 5000वर्ष बाद आता हूँ। दूसरा कोई कह न सके। तुम बच्चे जानते हो हम शिवबाबा के पास आते हैं। ब्रह्मा भी देवता है। प्रजापिता ब्रह्मा। यह भी 84 जन्म लेंगे ना। इनको पावन देवता भी कहते हैं। तो पतित भी कहते हैं। देवता बन फिर नीचे उतरेंगे। तुम ब्राह्मण पावन भी बनेंगे फिर पतित भी। तो अभी सयाने बनो। अपने ऊपर रहम करो। कुदृष्टि छोड़ दो। भारत में कुदृष्टि ही हैं। सतयुग में कुदृष्टि होती ही नहीं। न सुधारेंगे मुफ्त बहुत कड़ी2 सजा खावेंगे। बहुत पछतावेंगे। तुमको पिछाड़ी में सा0 होनी है। इसलिए अपन पर रहम करो। मांगो नहीं। बाप कहते हैं एक को याद करो। देहधारी कोई को याद नहीं करो। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी याद न करो। तुमने प्रतिज्ञा भी किया है। कोई से फ्लिींग आता है यह प्रतिज्ञा पालन रहे मेरा तो एक दूसरा न कोई। बाप भी कहते हैं मेरे तो सभी बच्चे दूसरा न कोई। रूहों को ही देखते रहे। बाप के साथ बहुत इमानदारी चाहिए। डिसओनेस्ट न होनी चाहिए बाप के साथ। इसमें समझ की बात है। तुम बच्चों में मनुष्य भी हैं जनावर भी हैं। कोई मनुष्य से देवता बनते हैं कोई जनावर के जनावर ही रह जाते हैं। सूरत मनुष्य की सीरत जनावरों मिसल ही है। बाप तारना करते हैं पोतामेल देखो हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है। सर्वगुण सम्पन्न..... बने हैं। रोज अपने से पूछो तब ही ऊँच पद पा सकेंगे। बाप को न बतावेंगे छिपावेंगे तो वृद्धि होती जावेगी। अन्दर खाता रहेगा। बाबा सावधान करते रहते हैं। अपना कैरेक्टर्स सुधारो। तुम दैवी कैरेक्टर वाले बनते हो। आसुरी कैरेक्टर को जल्दी बदलना है। मौत पर भरोसा थोड़े ही है। बहुत गई..... यह पुरानी दुनिया खत्म हुई कि हुई। नई दुनिया में चलना है। तो दैवीगुण जरूर चाहिए। अन्दर खाता होगा हम क्या2 कर रहे हैं। बाप जानते हैं। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान रहो। जो देखता हूँ यह सभी तो खत्म होने वाला है। इनको देखकर ही क्या करें। दिन प्रतिदिन पुराने घर का विनाश नजदीक होता जावेगा। फिर टूलेट हो जावेंगे। इसलिए बाप कहते हैं सिमर–सिमर सुख पाओ..... अन्दर–बाहर बहुत साफ चाहिए। कोई भी खराब काम न होना चाहिए। बाप को याद करो तो पाप कटे। बाप का बनकर पाप किया तो सौण दन्ड। इसलिए बाबा खून से भी लिखवाते हैं। तकदीर हो तो ऐसी (ल0ना0) हो। हम इन जैसे सर्वगुण सम्पन्न..... हैं। अवगुण है तो निकालना है। नहीं तो मरे। पद भी भ्रष्ट होगा। नहीं सुधरते हैं, चार्ट नहीं रखते हैं तो खलास। सिर्फ याद का ही चार्ट नहीं। सर्वगुण सम्पन्न भी बनना है।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

–: मूल बात कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, दैवी गुण धारण करो तो विश्व के मालिक बनेंगे :–